दृष्टि The Vision

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

(मध्यकालीन इतिहास)

8 Test

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–H2

Name: Ravi Gangwar **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** AWAKE-19/G002

Center & Date: Mukherjee Nagar, 4/8/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0801337

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित है।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q C A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) एक हिंदू मंदिर स्थल

A Hindu temple site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मार्तण्ड का सूर्य मन्दिर :- इसका निर्माण ललितादित्य मुक्तापीड ने किया था। यह वर्तमान कश्मीर में एकलौता सूर्य मन्दिर है तथा अन्य सूर्यमन्दिरों में उड़ीसा का सूर्य मन्दिर प्रमुख है।

(iv) एक चालुक्यकालीन नगर

A Chalukyan city

एहोल :- वर्तमान में कर्नाटक में स्थित है तथा चालुक्य कालीन कला के प्रमुख केन्द्र यथा एहोल, बादामी, पट्टदकल में प्रमुख स्थान है तथा यहाँ की कला बेसर शैली का प्रतिनिधित्व करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(v) एक महाजनपदकालीन स्थल

A Mahajanpada site

गंधार :- यह महाजनपद कालीन स्थल है इसकी राजधानी कम्बोज थी तथा महाभारतकाल में यह राज्य कौरवों की तरफ से लड़ा था।

(vi) एक बौद्ध स्थल

A Buddhist site

पंटशाल :- प्रमुख बौद्ध स्थल है यहाँ पर बुद्ध की लेटे हुए मुद्रा में प्रतिमा का निर्माण किया गया है तथा यह महायान बौद्ध धर्म का केन्द्र स्थल है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(vii) एक गुहा स्थल

A cave site

उदयगिरी - खण्डगिरी में उपयुक्त गुफाओं का निर्माण महान कलिंग शासक खारवेल द्वारा कराया गया था इसमें निर्मित गुफा का निर्माण रानी गुफा था तथा यह जैनों को समर्पित थी तथा यह दो मंजिली गुफा थी

(viii) एक प्राचीन अभिलेख स्थल

An ancient inscription site

जूनागढ़ :- यह वर्तमान में गुजरात में स्थित है। यहाँ से रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख प्राप्त हुआ है जो विशुद्ध संस्कृत में पहला अभिलेख है। इसी से सिंचाई की आवश्यकता हेतु बनाई गयी सुदर्शन झील के बारे में पता चलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ix) एक नवपाषाणकालीन स्थल

A Neolithic Site

(x) एक हड़प्पाकालीन स्थल

A Harappan site

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xi) एक प्राचीन अभिलेख स्थल

An ancient inscription site

(xii) एक बौद्ध धार्मिक स्थल

A Buddhist religious site

सारनाथ :- भगवान बुद्ध ने यहाँ अपना प्रथम उपदेश दिया था तथा यह विहार में स्थित है तथा यहीं पर धर्मचक्रप्रवर्तन की रचना हुयी थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xiii) एक महाजनपदकालीन नगर

A Mahajanpada city

मथुरा :- महाजनपदकालीन स्थल है, इसकी राजधानी भश्मक थी तथा यहाँ राजतंत्रीय शासन था। वर्तमान में भगवान कृष्ण के सन्दर्भ में प्रसिद्ध है।

(xiv) एक मध्यपाषाणकालीन स्थल

A Mesolithic site

सराय नाहर राय

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xv) एक मध्यकालीन राजनीतिक केंद्र

A medieval political centre

लखनौती :- यह मध्यकालीन सेन राजवंश, जिसका बंगाल पर शासन था, की राजधानी थी। इसके अन्तिम राजा लक्ष्मण सेन थे और इनको बख्तियार खिलजी द्वारा पराजित किया गया था।

(xvi) एक ताम्रपाषाणिक स्थल

A chalcolithic Site

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xvii) एक प्राचीन शहर

An ancient city

देवगिरी :- इस पर राजा रामचंद्र का शासन था जिस पर खिलजी ने आक्रमण किया और अपना अधिकार स्थापित किया तथा बाद में दक्षिण अभियानों हेतु इसका प्रयोग किया।

(xviii) एक हड़प्पाकालीन स्थल

A Harappan site

सुरकोतड़ा :- यहाँ से अश्व की हड्डियों का प्रथम साक्ष्य प्राप्त हुआ है किन्तु इनका प्रयोग हड़प्पा वासी करते थे या नहीं इस बारे में जानकारी नहीं है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xix) एक मध्यपाषाणकालीन स्थल

A Mesolithic site

(xx) एक मध्यकालीन धार्मिक केंद्र

An ancient religious site

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (a) प्रारंभिक मध्यकालीन भारत के शहरों के उत्थान एवं विकास की प्रक्रिया में विभिन्नता के तत्त्व निहित थे। कथन के संदर्भ में शहरी केंद्रों की प्रमुख विभिन्नताओं को व्याख्यायित कीजिये। 15

Differential factors were associated with the evolution and growth of early medieval Indian cities. Explain the diversities of urban centers with reference to above statement. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रारंभिक मध्यकालीन भारत के शहरों के उत्थान एवं विकास की प्रक्रिया को मोहम्मद हबीब ने 'तृतीय शहरीकरण' की संज्ञा दी जिसका विकास मुख्यतः सल्तनत कालीन राजनैतिक स्थायित्व तथा आर्थिक समृद्धि के चलते हुआ।

वस्तुतः मध्यकाल में नगरों की उत्पत्ति के पीछे विभिन्न कारक विद्यमान थे। जैसे कि :-

i) राजधानी क्षेत्र के रूप में जैसे कि दिल्ली, तथा विभिन्न राजपूत राज्यों, दक्षिणी राज्यों की राजधानी के रूप में नगरों का विकास हुआ।

ii) सांस्कृतिक क्षेत्र ~~केन्द्र~~ के रूप में जैसे कि अजमेर, आदि का विकास हुआ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

iii) इक्तादारों के निवास स्थान के आस-पास नगरों का विकास हुआ। वस्तुतः इक्तादारों की विभिन्न आवश्यकता तथा भोग-विलास की वस्तुओं की आपूर्ति के क्रम में नगरों की स्थापना हुयी।

iv) इसी प्रकार व्यापारिक केन्द्र के रूप में नगरों का विकास हुआ। वस्तुतः सूरत, मालवा, बंगाल, बिहार आदि में शिल्पगत विशेषताओं के चलते विभिन्न नगरों का विकास हुआ।

v) सैनिक केन्द्र यथा जहाँ सैनिक टुकड़ियों का निवास होता था वहाँ पर भी विभिन्न नगरों के विकास को प्रोत्साहन मिला।

vi) इसी प्रकार विभिन्न राजाओं द्वारा अनेक नगरों की स्थापना की गयी जैसे- फिरोज द्वारा जौनपुर, हिसार आदि की स्थापना की गयी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

vii) इसी प्रकार विभिन्न व्यापारिक मार्गों के किनारे व्यापार अनुकूलता तथा आर्थिक गतिविधियों के चलते विभिन्न ग्रामीण क्षेत्र के लोगों का बसाव होता गया और नगर अस्तित्व में आते गये।

viii) आंतरिक बाजार की स्थापना, उत्पादन तथा माल बिक्री के क्रम में विभिन्न स्थानों का विकास हुआ जिनका बाद में नगर के रूप में रूपान्तरण भी हुआ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मध्यकालीन नगरीय प्रक्रिया विविध स्वरूपों से युक्त थी और यह न केवल प्रथम व द्वितीय नगरीकरण की अपेक्षा अधिक व्यापक तौर पर घटित हुयी थी बल्कि प्रकृति में स्थायी भी थे जिसके प्रमाण अब तक उपलब्ध है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) शेरशाह सूरी ने अपने अल्प शासन काल में न केवल विस्तृत साम्राज्य की स्थापना की अपितु सुदृढ़ व स्थायी प्रशासनिक ढाँचे की नींव भी रखी। चर्चा कीजिये। 15

Sher Shah Suri not only established a extended empire during his shorter regime but also laid the foundation of a strong and stable administrative structure. Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

शेरशाह सूरी का साम्राज्य दूसरा अफगान साम्राज्य था वस्तुतः इसकी कालावधि (1540-45) बहुत कम रही; किन्तु इतनी कम अवधि में भी इसने प्रशासनिक, सैनिक, भू राजस्व के क्षेत्र में कालजयी सुधार किये थे।

शेरशाह ने 1539 में कन्नौज के युद्ध तथा चौसा के युद्ध में हुमायूँ को हराकर अफगान साम्राज्य की स्थापना की। इसके बाद साम्राज्य विस्तार के क्रम में इसने खोखरों को पराजित किया, राजपूत राजा मालदेव को पराजित किया, मालवा पर अधिकार किया, बंगाल विजय को किया आदि सैनिक विजयें की जो इसके साम्राज्य की विशालता का परिचायक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शेरशाह ने केवल साम्राज्य विस्तार पर ध्यान नहीं दिया बल्कि जीते गये क्षेत्रों के प्रशासन ~~पर~~ भी ध्यान दिया। वस्तुतः उसने अपने साम्राज्य को प्रांतों में बाँटा जहाँ इसके बाद सरकार तथा उसके बाद परगना नामक इकाई मौजूद थी।

शेरशाह ने बंगाल की समस्या को समाप्त करने हेतु उसे 11 सरकारों में बाँटा तथा प्रत्येक के लिए अधिकारी नियुक्त किये तथा इसी के साथ इनमें समन्वय हेतु एक अधिकारी की भी नियुक्ति की।

शेरशाह ने प्रशासन में स्थानीय उत्तरदायित्व का सिद्धांत लागू किया अर्थात क्षेत्र में कानून प्रशासन, चोरी रोकने आदि की जिम्मेदारी संबंधित मुखिया की होती थी। जिसके चलते साम्राज्य में बहुत स्थायित्व आया। कहते थे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है कि शेरशाह के शासन में 80 साल की वृद्ध अपने साथ सोने से भरी टोकरी लेकर बिल्कुल सुरक्षित सफर कर सकती थी"

अन्य सुधारों में उसने व्यापार हेतु शेरशाह मार्ग का निर्माण कराया, रास्तों में विभिन्न सरायों तथा भोजनालयों का निर्माण करवाया तो भू राजस्व के क्षेत्र में टोडरमल की सहायता से भूमि का वर्गीकरण करते हुए भू राजस्व निर्धारित किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि शेरशाह के 5 साल का कार्यकाल अपने आप में इतना महत्वपूर्ण था कि उसे कई मायनों में अकबर का पूर्वगामी कहा जाता है जिसकी योजनाओं को अकबर ने थोड़े-बहुत सुधार के बाद सफलतापूर्वक लागू किया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) अकबर द्वारा स्थापित मुगल प्रशासनिक ढाँचा आगामी शासकों के काल में भी बना रहा, लेकिन अकबर की उदार आदर्शवादी नीतियाँ दीर्घकालीन न हो सकीं। टिप्पणी कीजिये। 20

The Mughal administrative structure established by Akbar continued under his successors, but his liberal idealistic policies could not be retained. Comment. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुगलकाल के सबसे चमुख शासक के रूप में विख्यात अकबर ने अपने सासन के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में सुधारात्मक कार्यवाईयाँ की तो नवीन प्रणालियाँ भी स्थापित की। जिसके चलते आज भी वहे अकबर महान कहा जाता है।

अकबर ने प्रशासनिक व्यवस्था के क्रम में मनसबदारी व्यवस्था लागू की तथा अपने साम्राज्यों को सूबों में बाँटा जिनमें दीवान तथा सूबेदार की नियुक्ति की तथा सूबों को सरकार तथा सरकार को परगनों में विभाजित किया। उसने केन्द्रीय स्तर पर दीवाने-ए-विजारत, सैन्य विभाग, पत्राचार विभाग आदि की स्थापना की तथा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

न्यायिक मामलों हेतु मुफ्ती की की नियुक्ति की तो दूसरी तरफ उसने भू-राजस्व के क्षेत्र में आइन-ए-दहसाला पद्धति लागू की तो दीन-ए-इलाही लागू किया तो साथ ही बंदास प्रथा की समाप्ति, सतीप्रथा पर रोक तथा तीर्थयात्रा कर व जजिया कर पर भी रोक लगायी। इसी क्रम में अकबर द्वारा मजहरनामा की घोषणा की की गयी।

आगामी शासकों में फिर चाहे वो प्रमुख मुगल शासक हों या फिर उत्तरवर्ती पतनशील मुगल साम्राज्य के अदूरदर्शी शासक हों सभी के सम्य एक चीज सामान्य तौर पर विद्यमान है और वह है कि उन्होंने चाहे अकबर की नीतियों के अनुसार चलने का प्रयत्न किया हो किन्तु वे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

असफल नहीं हो सके।
जैसे कि - औरंगजेब द्वारा राजपूत नीति से विचलन > जजिया कर का लगाना तो वहीं आगे के मुगल सम्राटों में उत्तराधिकार संघर्ष की समस्या। वस्तुतः इन सभी समस्यों के मूल में साम्राज्य की आवश्यकता थी जिसको जिस सम्राट ने जैसा समझा उसको उसी तरह से समाधान करने का प्रयास किया। जिसके कारण साम्राज्य का संगठन कमजोर हुआ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि परवर्ती मुगल शासक अपनी शासकीय अक्षमता तथा अदूरदर्शिता के चलते न केवल अकबर की अन्य नीतियों से विचलित हुए बल्कि अकबर द्वारा स्थापित प्रशा० ढाँचे की भी सुरक्षा नहीं कर सके और अन्ततः मुगल साम्राज्य का पतन हो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (a) "भारतीय इतिहास में पहली बार यह प्रकट हुआ कि खेती, खेती के तरीकों, खेती के साधनों को सुधारना भी सरकार के कर्त्तव्यों में आता है।" कथन के आधार पर मुहम्मद-बिन-तुगलक के कृषि संबंधी प्रयासों की व्याख्या कीजिये। 20

"For the first time in Indian history it appeared that reforming agriculture, its methods and its resources, are also among the duties of the government". Explain the agriculture-related initiatives of Muhammad bin Tughlaq. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मुहम्मद बिन तुगलक सल्तनतकाल का सबसे अधिक शिक्षित तथा साहसी सुल्तान था वस्तुतः उसको नवाचार करने का शौक था जिसके चलते उसने साम्राज्य में कई नवीन प्रयोग किये और अपनी प्रबन्धकीय अकुशलता के चलते लगभग सभी में असफल हुआ।

मुहम्मद तुगलक से पूर्व के दिल्ली सुल्तानों ने कृषि क्षेत्र के सुधार हेतु कार्य नहीं किये जबकि इनकी आय का प्रमुख स्रोत भू-राजस्व ही था। अलाउद्दीन खिलजी ने भी भू राजस्व के क्षेत्र में बिचौलियों को समाप्त किया किन्तु इसका उद्देश्य राज्य के हित की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सुरक्षा या न कि रैय्यतों की। वहीं तुगलक द्वारा कृषि क्षेत्र में सुधार हेतु निम्न प्रयास किये गये:-

इसने दीवान-ए-कोही नामक कृषि विभाग की स्थापना की, कृषकों को तकावी ऋण वितरित किया, फसल चक्र प्रणाली की अवधारणा को लागू किया, सिंचाई हेतु नहरों का निर्माण किया आदि।

किन्तु तुगलक द्वारा किये गये प्रयासों से कृषि क्षेत्र पर सकारात्मक असर नहीं पड़ा। वस्तुतः अकाल के समय दोआब में लगान वृद्धि हो या फिर सरकारी अधिकारियों द्वारा कृषि के ~~विकास~~ हेतु बंजर भूमि के विकास के लिए दिया गया ऋण को स्वयं के भोग-विलास में खर्च करना।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इन सबके चलते तुगलक के सारे प्रयास तात्कालिक रूप से व्यर्थ साबित हुए। इन्हीं असफलताओं के चलते तुगलक को पागल/मूर्ख सुल्तान भी कहा जाता है। वस्तुतः यह इसका पागलपन नहीं अपितु प्रबन्धकीय नियंत्रण में असफलता थी जिसके चलते वह योजनाओं का क्रियान्वयन न हो सका।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि तुगलक द्वारा किये गये प्रयास भले ही सल्तनत काल में किसी सुल्तान ने पहली बार किये हों किन्तु कृषि क्षेत्र के विकास की जिम्मेदारी प्राचीनकाल से राज्य की रही है और इसे सुदर्शन झील के निर्माण संबंधी अभिलेखों से प्रमाणित भी किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) दक्षिण भारत में श्रेणियों के उदय एवं विकास को विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिये। 15

Elaborate the evolution and development of 'Shrenis' in Southern India. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दक्षिण भारत में श्रेणियों का विकास वस्तुतः व्यापारिक, आर्थिक, सामाजिक आवश्यकता के चलते हुआ जिनकी कार्यगत, स्वरूपगत विशेषता काफी हद तक उत्तर भारत में प्रचलित श्रेणियों से मिलती जुलती थी।

दक्षिण भारत में स्थापित ये श्रेणियाँ वस्तुतः व्यापार संघ, शिल्पी संघ के रूप में स्थापित थी जिनका मुख्य कार्य संघ में शामिल लोगों के हितों की रक्षा करना था जिसमें सैन्य संघर्ष तक शामिल था। इसी प्रकार ये श्रेणियाँ तत्कालीन समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार के अवसर उपलब्ध करवाती थीं तो दूसरी तरफ जरूरत पड़ने पर न्यायिक कार्य को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

करती थीं।

इस प्रकार दक्षिण भारतीय राजनीति में इन श्रेणियों का स्थान राज्य द्वारा स्थापित प्रशासनिक व्यवस्था के समांतर था तो दूसरी तरफ इनको राज्य द्वारा मान्यता भी प्राप्त होती थी तथा राज्य इनके आन्तरिक प्रशासन में ~~दखल~~ दखल नहीं देता था। प्रमुख श्रेणियों में मणिग्रामम्, नानादेशी आदि हैं। इन श्रेणियों द्वारा बाण्ड भी (मुद्रा पत्र) जारी किये जाते थे। जिनकी माँग विदेशी क्षेत्रों में तक थी तथा इनकी मान्यता भी विभिन्न देशों में थी।

विभिन्न श्रेणियाँ मन्दिर प्रबंधन का कार्य भी करती थी जिसके चलते कालान्तर में मन्दिर प्रशासन भी सामाजिक गतिविधियों यथा व्यापार, नृत्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

समाज कार्य आदि में शामिल होने लगे। वर्तमान समय में शेट्टी, चेट्टी आदि समुदाय इन्हीं श्रेणियों के अंग थे जो आज अनौपचारिक ऋण प्रणाली का प्रमुख अंग है।

वस्तुतः प्राचीन काल में ऋण हेतु संस्थागत व्यवस्था के रूप में इन्हीं श्रेणियों का वर्चस्व स्थापित था तथा व्यापार-वाणिज्य हेतु भी यही धन लगाते थे।

इस प्रकार स्पष्ट है कि दक्षिण भारतीय क्षेत्र की श्रेणियाँ जिनकी उपस्थिति के प्रमाण संगम काल से प्राप्त हो रहे हैं, इनका दक्षिण भारतीय समाज में बहुत महत्व था अर्थात ये न केवल व्यापारिक, आर्थिक मामले देखते थे अपितु सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक मुद्दों को भी निपटाते थे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) "बहमनी साम्राज्य की शक्ति श्रेष्ठता के विपरीत विजयनगर साम्राज्य अपने राजक्षेत्रीय विस्तार और सांकृतिक संपन्नता के लिये जाना जाता है।" विश्लेषण कीजिये। 15

"In contrast to the superiority of the Bahamani empire, the Vijayanagar empire is known for its territorial expansion and cultural prosperity."Analyze. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मध्यकाल में दक्षिण भारतीय साम्राज्य

बादी प्रसार में विजयनगर तथा बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई थी।

वस्तुतः दोनों साम्राज्य मुख्यतः आर्थिक, राजनैतिक कारणों से लड़ते रहे और अन्ततः दोनों का पतन हो गया।

बहमनी साम्राज्य की मुख्य प्रतिद्वंद्विता विजयनगर से थी जिसके चलते दोनों में सैनिक संघर्ष आम था और इसी कारण बहमनी साम्राज्य में कोई खास सांस्कृतिक, साहित्यिक उपलब्धि नहीं दिखायी देती है जबकि विजयनगर काल में तेलगू साहित्य का विकास (अमुक्तमाल्यदा ग्रन्थ, अष्टदिग्गज की संकल्पना), द्रविड़ कालीन स्थापत्य का निर्माण (लेपाक्षी मंदिर, मीनाक्षी मंदिर, हजार

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खम्भा मंदिर) आदि सांस्कृतिक उपलब्धियाँ हैं तो बहमनी की अपेक्षा राज्य-क्षेत्रीय विस्तार के रूप में लगभग सम्पूर्ण दक्षिण भारत पर (कृष्णा के दक्षिण) अधिकार भी था और रही बात आर्थिक सम्पन्नता की तो वह भी विदेश व्यापार में विविधता के चलते विजयनगर साम्राज्य अधिक समृद्ध था।

किन्तु अगर ध्यान से विश्लेषण किया जाये तो यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि बहमनी राज्य का भी क्षेत्र विस्तार काफी था जिसमें गोवा, उत्तरी मालवा, पूर्वी उड़ीसा का क्षेत्र शामिल था तो वहीं सांस्कृतिक विशेषता के क्रम में महमूद गंवा द्वारा बनवायी गयी इमारतें प्रमुख हैं तो मुस्लिम दर्शन के क्रम में सूफी संतो का आगमन भी प्रमुख है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बहमनी साम्राज्य व विजयनगर में शक्ति श्रेष्ठता का संघर्ष कभी निर्णायक स्थिति में नहीं पहुँचा कभी बहमनी की विजय हो कभी विजयनगर की। इन्हीं सब में दोनों साम्राज्यों के संसाधन नष्ट होते गये और अन्ततः बहमनी के विघटन के पश्चात भविष्य में चार राज्यों ने विजयनगर को 1565 में तालीकोटा के युद्ध में हराकर विजयनगर साम्राज्य का भी अन्त किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बहमनी तथा विजयनगर राज्य दोनों में न केवल सांस्कृतिक / सामाजिक समृद्धता बढ़ी अपितु विदेशी व्यापार, राज्य क्षेत्र का विस्तार भी हुआ किन्तु रायचूर दोआब, गोवा, कृष्णा तुंगभद्रा दोआब पर नियंत्रण जैसे मुद्दों पर दोनों आपस में संघर्षरत रहे और अन्ततः दोनों समाप्त हो गये।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: $10 \times 5 = 50$

Answer the following in about 150 words each:

(a) "ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या" के संदर्भ में शंकराचार्य के अद्वैतवादी दर्शन को व्याख्यायित कीजिये।

With respect to "brahma satya jagat mithya," explain Shankaracharya's Advaitism.

भारतीय दर्शन में भक्ति आन्दोलन की शुरुआत शंकराचार्य के द्वारा मानी जाती है। जिन्होंने मोक्ष प्राप्ति हेतु ज्ञान के मार्ग को प्रमुखता सौंपी थी तथा अद्वैतवाद का सिद्धांत दिया था।

शंकराचार्य का मानना था कि ब्रह्म व जीव दो अलग-अलग सत्तायें न होकर के एक ही सत्ता के दो विभिन्न अंग है। जिनका विलगन हो गया है और अन्ततः ब्रह्म व जीव को एक ही में मिल जाना है।

इसी क्रम में उन्होंने ब्रह्म को परम सत्ता तथा ज्ञान का स्रोत बताया और संसार को मोह-माया से युक्त बताया तथा उन्होंने जीव के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

द्वारा सांसारिक सम्बन्धों के बंधन से मुक्त होने के लिए ज्ञान का मार्ग सुझाया तथा संसार का क्षणिक अर्थात मिथ्या की संज्ञा दी।

इन्होंने स्पष्ट किया कि जीव का एकमात्र उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना होना चाहिए और इस संसार से मुक्ति के बाद इसका उस परम सत्ता अर्थात ब्रह्म में विलय हो जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि शंकराचार्य ने अपने अद्वैत दर्शन का मूल आधार ज्ञान प्राप्ति बताया तथा बौद्ध धर्म में भी बुद्ध ने दुःखों से मुक्ति का उपाय भी ज्ञान प्राप्ति बताया था। जिस कारण शंकराचार्य को "प्रच्छन्न बौद्ध" की संज्ञा दी जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(b) 'इक्ता' व्यवस्था केंद्रीकृत होती सल्तनतकालीन राजनीतिक व्यवस्था का परिचायक थी। स्पष्ट कीजिये।

The 'Iqta' system indicated centralisation tendency of the Sultanate-era political system. Explain.

इक्ता व्यवस्था का प्रारम्भ सल्तनत काल के दौरान मुहम्मद गोरी ने किया तथा इसको संस्थागत रूप ऐबक ने प्रदान किया। वस्तुतः यह एक प्रकार का भू-अनुदान था जिसे व्यक्ति राज्य सैनिक व प्रशासनिक आवश्यकता की पूर्ति हेतु प्रदान किया जाता है।

इक्ता व्यवस्था में इक्तादार को वंशानुगत अधिकार नहीं था तथा ख्वाजिल की अवधारणा भी उपस्थित थी जिसके चलते इक्ता पर आर्थिक नियंत्रण केन्द्रीय सत्ता का बना रहता था तो वहीं इक्तादार के माध्यम से सुल्तान दूरवर्ती क्षेत्रों पर प्रशासनिक व सैनिक नियंत्रण कायम रख पाता था।

वस्तुतः इक्तादार की केंद्रीय प्रशासन द्वारा नियुक्ति किया जाना तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समय-समय पर विभिन्न सुलतानों द्वारा इक्तादारों के सम्बन्ध में किये गये विभिन्न प्रयोगों के चलते इक्तादारों पर केन्द्रीय नियंत्रण बढ़ता जा रहा था जैसे कि - ख्वाजा अधिकारी की नियुक्ति (बलबन), इक्तादारों के स्थानान्तरण पर बल (खिलजी), इक्तादारों का वेतन केन्द्रीय खजाने से देना (तुगलक) आदि।

इस प्रकार स्पष्ट है कि केन्द्र में जितनी सशक्त राजनैतिक प्रणाली उपस्थित थी राज्य में उतनी ही इक्तादारों की परिस्थिति में हस्तक्षेप किया गया और इक्ता पर केंद्रीय नियंत्रण बढ़ाकर सल्तनत की सैनिक तथा वित्तीय आवश्यकताएँ पूरी करने का प्रयास किया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) विजयनगर साम्राज्य में स्त्रियों की स्थिति समकालीन राज्यों से भिन्न नहीं थी। मूल्यांकन कीजिये।

The situation of women in the Vijayanagara empire was not different from other contemporary states. Evaluate.

विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हरिहर एवं बुक्का ने 1336 ई० में कृष्णा - तुंगभद्रा नदी किनारे की थी। विजयनगर कालीन समाज तत्कालीन हिन्दु, मुस्लिम परिस्थितियों से प्रभावित था।

वस्तुतः विजयनगर समाज में स्त्रियों की दशा को ऐसे समझा जा सकता है :-

i) विधवा प्रथा, सतीप्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियाँ प्रचलित थी।

ii) देवदासी प्रथा प्रचलित थी।

iii) विधवा पुनः विवाह होते थे तथा इन पर कर भी शून्य था किन्तु इनकी व्यापकता बहुत कम थी।

iv) स्त्री शिक्षा में मुख्यतः धर्म, साहित्य, नृत्य आदि की प्रमुखता थी।

v) उच्च शिक्षा का प्रचलन उच्च वर्गीय स्त्रियों में था तथा इन्हें गणिका कहा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जाता था
vi) स्त्री, वेश्यावृत्ति जैसे धन्धों में भी लिप्त थीं तो समाज की स्थिति पितृसत्तात्मक थी।

उपर्युक्त बिन्दुओं की तुलना, तत्कालीन समय के किसी भी समाज से करने पर यह पता चलता है कि स्त्री की यह निम्न दशा किसी साम्राज्य विशेष के अधीन न होकर एक कालिक विशेषता है जिसका प्रसार लगभग सभी साम्राज्यों में है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि निम्न स्त्री दशा की अवधारणा का प्रसार लगभग उत्तर वैदिक कालीन समाज से प्रारम्भ होकर मध्यकाल में निम्न स्तर पर पहुँच गया था जिसके सुधार हेतु बाद में सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन चलाने पड़े।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(d) सामंजस्य तथा सम्मिश्रण की नीति का प्रयोग करते हुए मुगलकालीन चित्रकला के विकास में यूरोपियन कला के प्रभाव की चर्चा कीजिये।

Discuss the effect of European art in the development of Mughal painting, with respect to synthesis and composition.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मुगलकालीन चित्रकला की शुरुआत हुमायूँ के काल से मानी जाती है जिस समय यहाँ ईरान के दो प्रमुख चित्रकार मीर अली, अब्दुस्समद उपस्थित थे।

वस्तुतः मुगलकालीन चित्रकला का चरम स्तर जहाँगीर काल में माना जाता है तथा इस पर ईरानी, राजपूती, यूरोपीय आदि प्रभाव भी पड़े। वस्तुतः यूरोपीय कला के आने से मुगल कला में कई नवीन तत्वों का समावेश हुआ। जैसे:-

त्रिविमीय चित्रों में आगे की वस्तु का छोटा बनाना, व्यक्ति चित्रण की शुरुआत, पंख वाले देवदूत तथा मरियम का चित्रण अर्थात यूरोपीय धार्मिक विषयों का चित्रण आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वस्तुतः मुगलकालीन चित्रकला ने इन सभी तत्वों को खुद में समाहित करते हुए अपना रूप प्रस्तुत किया जिसमें मोरक्को शैली के अलंकृत हासिये का प्रयोग तथा ईरानी राजदरबार का चित्रण तथा राजपूत शैली के प्रकृति चित्रण की विशेषताएँ शामिल हैं। वस्तुतः मुगल-शैली की चित्रकला में औरंगजेब के काल में बहुत विकास नहीं देखा जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मुगल चित्रकला विभिन्न क्षेत्रीय शैलियों की स्वरूपगत विशेषताओं से युक्त थी तथा उसने इनके साथ सम्मिश्रण तथा समावेशन की तकनीक अपनाकर अपना मूल स्वरूप भी बनाये रखा तथा अन्य विशेषताओं को भी ग्रहण किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) मध्यकालीन तकनीकी के अंतर्गत सिंचाई के विभिन्न साधनों का विवरण दीजिये।

Describe the various modes of irrigation under medieval technologies.

मध्यकाल में सल्तनत काल तथा मुगल काल के अन्तर्गत राजनैतिक स्थायित्व की प्राप्ति हुयी जिसके चलते समाज में वैज्ञानिक-तकनीकी प्रगति हुयी तथा इस प्रगति का लाभ सभ्य क्षेत्रों की तरह ही कृषि क्षेत्र को भी मिला।

सिंचाई के विभिन्न साधनों में तुगलक काल में फिरोजशाह, मुहम्मद बिन तुगलक तथा गयासुद्दीन तुगलक ने पूरे क्षेत्र में नहरों का जाल बिछाने का कार्य किया।

इसी प्रकार रहट प्रणाली के प्रयोग के चलते अब गहरे कुएँ से भी सिंचाई हेतु जल की निकासी सम्भव हुयी। इसी क्रम में मध्यकाल में सिंचाई हेतु कृत्रिम तालाबों का

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निर्माण भी प्रमुखतया से किया गया ताकि अकाल, सूखा से निपटा जा सके दूसरी तरफ वर्षा जल संचयन प्रणाली का विकास किया गया तथा किले के अन्दर ही वर्षा जल को संरक्षित किया जाने लगा जिसके संरक्षित पानी का प्रयोग सिंचाई के साथ-साथ पेयजल में भी किया जाता है।

इसी क्रम में इन सबके अतिरिक्त सिंचाई का मुख्य साधन वर्षा ही थी जो कि अनिश्चित थी जिस कारण भारतीय कृषि में भी अनिश्चितता विद्यमान रहती थी।

आज के समय में भी भारतीय कृषि का वर्षा द्वारा सिंचाई पर अत्यधिक रूप से निर्भर होना भारत में सिंचाई साधनों की अल्पता को दर्शाता है जिसके त्वकाल प्रबंधन की आवश्यकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) फिरोज़शाह तुगलक के जनकल्याणकारी एवं प्रशासनिक सुधार के कार्य अपने पूर्वगामी शासक के कार्यों से उत्पन्न अस्थिरता एवं जनमानस के असंतोष को साधने का प्रयत्न था। व्याख्या कीजिये। 20

The fiscal and administrative reforms of Firoz Shah tughlaq were an attempt to check the instability and dissatisfaction among the masses that had risen due to the Policies of his Predecessors. Elaborate. 20

फिरोजशाह तुगलक, मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु के पश्चात 1351 में सिंहासन पर बैठा। वह एक हिन्दू माता से उत्पन्न हुआ था तो वहीं उसे उत्तराधिकार में मुहम्मद बिन तुगलक की सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक नीतियाँ मिलीं।

वस्तुतः उसके पूर्व के शासकों में प्रमुखतया: अलाउद्दीन खिलजी, तथा मुहम्मद तुगलक ने राज्य में विभिन्न परिवर्तन किये जैसे कि उलेमाओं का राज्य में हस्तक्षेप समाप्त करना, इक्ता व्यवस्था में सुधार, राज्य में आनुवंशिकता की जगह योग्यता पर बल देना, सैन्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भ्रष्टाचार में कमी करना आदि। इन सब कार्यों के फलस्वरूप जनता, सैनिक, उलेमा आदि वर्ग में सुल्तान के प्रति असंतोष विद्यमान था।

इन्हीं सब परिस्थितियों में फिरोज शाह तुगलक गद्दी पर बैठा। फलतः उसने राज्य के स्थायित्व व स्वयं के शासन के मजबूती हेतु विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रम चलाये यथा उसने इक्ता व्यवस्था को वंशानुगत बना दिया, सैन्य व्यवस्था में दाग तथा हुलिया को समाप्त कर दिया तथा खुद भ्रष्टाचार को प्रेरित किया तो कुलीनों की नियुक्ति आनुवंशिक आधार पर की तथा राज्य का शासन शरीयत के आधार पर चलाया।

उसने विभिन्न कल्याणकारी कार्य जैसे कि रोजगार विभाग की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्थापना, मदरसों का निर्माण, मुसलमानों को दान हेतु खैरात विभाग, सार्वजनिक चिकित्सा स्थानों का निर्माण आदि को अपनी मुस्लिम प्रजा का समर्थन प्राप्त करने हेतु लागू किया था ताकि इस पर एक अधर्मी मुसलमान होने का आरोप न लगे और इसके शासन को विभिन्न उलेमा, सैन्य, कुलीनों का सहयोग मिले।

इस प्रकार स्पष्ट है कि फिरोज की नीतियाँ राज्य के तात्कालिक लाभ हेतु बनायी गयीं थी जबकि दीर्घकाल में इन नीतियों ने सल्तनत का आधार खोखला कर दिया तथा सल्तनत के पतन को प्रशस्त किया और इस पतन पर आखिरी कील तैमूर लंग (1398) के आक्रमण की थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) जैन-उल-आबदीन ने अपने शासनकाल में युद्धभूमि में कोई विशेष सफलता अर्जित नहीं की, फिर भी उसे कश्मीर के अकबर की संज्ञा देना कितना उचित प्रतीत होता है? 15

During his reign, Jain-ul-Abidin had not earned any special success in battleground, yet how appropriate is it to give him the title of Akbar of Kashmir? 15

जैन-उल-आबदीन ने अपना शासन मुगल काल से पहले किया था और उसके पिता एक 'कट्टर मुसलमान थे जिनकी नीतियों से परेशान होकर लोग कश्मीर से पलायन करने लगे थे। ऐसे समय में एक विद्रोह में पिता की मृत्यु के बाद आबदीन ने शासन सम्हला।

वस्तुतः जैन-उल-आबदीन को कश्मीर का अकबर कहा जाता है क्योंकि मुगल कालीन अकबर की भाँति उसकी दृष्टि भी कश्मीर के सन्दर्भ में बहुत थी।

कश्मीर का आबदीन वास्तव अकबर की तरह ही धार्मिक रूप से उदार था अर्थात उसने तीर्थयात्रा कर

कृपया इस स्
कुछ न लिखें
(Please don't
anything in t

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जजिया कर हटाया, गौ हत्या पर प्रतिबन्ध लगाया, राज्य में अनुवाद विभाग की स्थापना की, कश्मीर में पुनः लौटने पर लोगों की सहायता की बात कही, अपना वजीर हिन्दु बनाया तो हिन्दु नागरिक मामले के निर्धारण हेतु हिन्दु पंडितों को नियुक्त किया। इसी सब विशेषताओं को ले कश्मीर का मकबर कहा जाता है।

वहीं दूसरी तरफ मकबर द्वारा विभिन्न साम्राज्यों की विजय की की गयी तो मजहबनामा की घोषणा, दीन-ए-इलाही की अवधारणा आदि मुद्दे अबदीन के सन्दर्भ में दिखायी नहीं देते हैं। इस दृष्टि से कुछ लोग यह तुलना उपयुक्त नहीं मानते हैं।

वस्तुतः एक बात यहाँ पर समझना जरूरी है कि मकबर द्वारा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लागू किये गये विभिन्न सुधारों के मूल में भावना धार्मिक उदारता, प्रजा कल्याण था और बिल्कुल यही अवधारणा आबदीन के कार्यों में भी दिखायी देती है और रही बात युद्ध विजय की तो यह काम कोई महानता वाला नहीं था। वस्तुतः यह तो एक युद्ध-कौशल था जिसमें अकबर पारंगत था।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जैन-उल-आबदीन को कश्मीर का अकबर कहना बिल्कुल उचित है तथा कुछ लोग तो अकबर को भारत का जैन-उल-आबदीन कहते हैं। वस्तुतः जैन-उल-आबदीन कश्मीर का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत का बड़शाह था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(c) मराठों की प्रशासनिक संरचना एक परिष्कृत केंद्रीकृत निरंकुश राजतंत्र पर आधारित थी। विश्लेषण कीजिये। 15

The administrative structure of Marathas was a refined centralized autocracy. Analyze. 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मराठा साम्राज्य का निर्माण शिवाजी द्वारा शुरू किया गया था तथा जिसमें आगे चलकर बाजीराव-I द्वारा अत्यन्त विस्तार किया गया। मराठा प्रशासनिक संरचना मुगल तथा तत्कालीन दक्षिणी राज्यों की प्रशासन संरचना से प्रभावित थी तथा अपनी कुछ मूल विशेषताओं से भी युक्त थी।

मराठा साम्राज्य का प्रधान छत्रपति होता था जिसकी सहायता हेतु एक मंत्रिपरिषद होती थी जिसका मुख्य मंत्री/प्रधान पेशवा होता था तथा अन्य सदस्यों में सुमंत - विदेश मंत्री, पण्डित राव - धार्मिक प्रमुख आदि थे।

वस्तुतः मराठा छत्रपति न्याय, प्रशासन, आर्थिक मामलों का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सर्वोच्च होता था। सारी नियुक्तियाँ इसी के द्वारा की जाती थी। क्षेत्रीय स्तर पर पाटिल, कुलकर्णी, बलूटे-बलूटे प्रशासन में सहयोग अवश्य देते थे किन्तु इनकी जवाबदेहिता भी केन्द्रीय प्रशासन की तरफ होती थी जिसका मुखिया छत्रपति होता था।

मराठा छत्रपति का पद वंशानुगत था अर्थात राजा का पुत्र ही छत्रपति था तथा वह सर्व शक्ति सम्पन्न माना जाता था तथा उसकी इसी प्रमुख स्थिति के चलते उसे विभिन्न सरदारों द्वारा सरदेशमुखी कर दिया जाता था जो कि मराठा प्रशासनिक तंत्र की निरंकुश राजतंत्र प्रणाली का सूचक है।

निरंकुश राजतंत्र का यह तत्व तत्कालीन सभी शासन प्रणालियों में पाया जाता था। वस्तुतः आंतरिक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गुरबाजी तथा राजनीतिक स्थायित्व के लिए यह जरूरी था तथा इसके लिए शासक का सक्षम, दूरदर्शी होना भी जरूरी था। शासन की समस्त गतिविधियाँ जैसे कि किलों का प्रशासन दो विभिन्न अधिकारियों का सौंपना, क्षेत्रीय प्रमुखों की नियुक्ति करना भी केन्द्रीय प्रशासन द्वारा होता था, जिसके चलते शासन अपने स्वरूप में केन्द्रीकृत था।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मराठा साम्राज्य केंद्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था से युक्त था। हालांकि कुछ समय पश्चात इसका प्रधान पेशवा हो गया तथा संगोला की संधि (1749) के बाद औपचारिक तौर पर मराठा शक्ति का केन्द्र पेशवा हो गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation